Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 011 Issue 06 JUN 2025 Pages 20 A.S. Rs 100

गुरुहरि काकाजी महाराज का १०८वाँ प्रागट्यपर्व - माणावदर

सत्संग समाचार

❊ रविवार, दि. १ जून को **CSR** (Corporate Social Responsibility) **Seminar** में डॉ. संजय वानानी, श्री. मुकुलभाई दोशी 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई खास पधारे थे। संजयजीने आज के युवापेढी को **CSR** के बारे में अच्छी जानकारी दी और खास करके जहाँ काम करते है उस कंपनी में बात करने का आग्रह रखें ऐसा अच्छा सुझाव दिया। बात करने से ही सभी को हम क्या कर रहे है वह जानकारी मिलेगी इसलिये उन्होंने उस मुद्दे पर ध्यान दिया। मुकुलभाई दोशी जो **Hindustan Lever** के साथ उनके **Transport** के क्षेत्र में बहुत नजदिकी संबंध रखते है उन्होंने अपने पवई मंदिर के **Project** के लिये हो सके उतनी मदद का भरोसा दिलाया और **Project** में लगनेवाले सभी आवश्यक चीजे कम से कम किफायती दाम में उपलब्ध करके देने का विश्वास दिलाया।

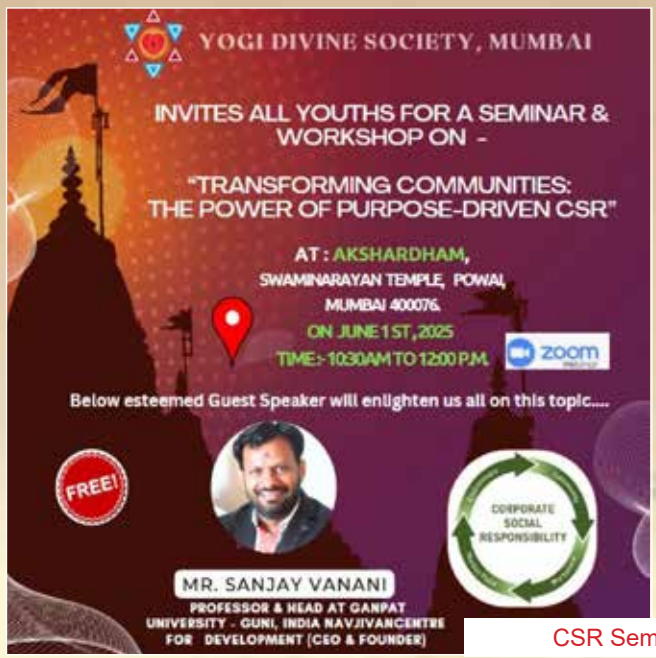

CSR Seminar at "Akshardham" Temple, Powai

❊ गुरुवार, दि. ५ से मंगलवार, दि. १० जून दौरान पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों और करीब १९० हरिभक्तों गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रागट्यपर्व निमित्त माणावदर पधारे थे। साथ ही सौराष्ट्र के पिपलाणा, लोज, मांगरोल, सोमनाथ, जुनागढ, गिरनार, फरेणी, गोंडल, आत्मीय योगीधाम-राजकोट जैसे कई तीर्थ स्थानों की यात्रा का आयोजन भी किया गया था।

At Girnar-Junagadh

At Girnar

At Junagadh

At Panchala

At Panchala

At Somnath

इस पूरी यात्रा का संक्षिप्त में विवरण बालमंडल के प.भ. मिहिरभाई भट्टने बहुत अच्छे से बताया। यात्रा दौरान प.पू. भरतभाईने विशिष्ट नियम दिये थे। (१) आँख, कान खुल्ली और मूँह बंद रखो। (२) हरपल गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में ज्यादा डूबों। (३) हमेशा सेवक ही रहो, राजा के जैसे नहीं।

माणावदर में दि. ७ जून की गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति भजन संध्या और दि. ८ जून को गुरुहरि काकाजी महाराज का १०८वाँ प्रागट्यपर्व अनुपम मिशन, मोगरी से इस अवसर के लिये खास पधारे हुए पू. अशोकभाई (प.पू. हरिभाई साहेब के सुपुत्र), पू. पंकजभाई पढियार और अन्य संतभाइयों की हाजरी में उत्साह और भक्तिभाव से मनाया गया।

At Manavadar

At Muktivav, Loej

At Laxmivadi, Manavadar

At Piplana

At Gondal

At Faneni

At Aatmiya Yogidham, Rajkot

At Swaminarayan Mandir, Manavadar

❊ शनिवार, दि. ७ जून की विशिष्ट भजन संध्या गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रागट्यपर्व के निमित्त भीम एकादशी के मंगलदिन माणावदर में भक्तिभाव से हुई।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि यहाँ जब आने का तय किया तब करीब २०० भक्तोंने टिकट बुकिंग कर दी। अच्छी व्यवस्था करने के लिये माणावदर मंडल और प्रतीक्षाबहन को खास धन्यवाद है। यह प्रसादी का स्थान है। महाराज के समय से लेकर सभी गुणातीत स्वरुपों यहाँ आये थे। गुरुहरि काकाजी महाराज के संबंध में आये तो उनकी दिव्यता, दासत्वभक्ति का अनुभव होता ही है। वे अंतर्यामी पुरुष थे। कोई भी परिस्थिति में हरपल वे केफ में ही रहते थे। सन् १९६६ के विमुख प्रकरण के समय मुंबई और माणावदर मंडल ही था। यहाँ देरी बनाई तब काकाजी की प्रार्थना के फलस्वरुप योगीबापाने आशीर्वाद दिये थे कि गोंडल देरी के जितना ही इसका प्रताप होगा। तो ऐसा अनुभव आज भी सभीको

Bhajan Sandhya at Manavadar

Bhajan Sandhya at Manavadar

होता है। यहाँ मूर्तियाँ भी प्रगट है। गुणातीत स्वरुपों की केवल स्मृति करते रहेंगे तो भी हमारे सारे काम हो जायेंगे। काकाजीने हमारे अंतर में भगवान बैठ जाये ऐसा सत्संग करवाया है और उस मार्ग पर सहज ही आगे बढे उसके लिये Techniques दी है। हे काकाजी! आपका प्रागट्यपर्व चल रहा है, तो हम हमेशा संप-सुहृदभाव-एकता रखें और गुणातीत स्वरुपों को हम पर गर्व हो ऐसा जीवन हम जी सके वही प्रार्थना।

पवई मंदिर की ओर से संतभाईयोंने माणावदर मंडल के सभी भाईयों को विशिष्ट स्मृतिभेट अर्पण की।

❊ **रविवार, दि. ८ जून को गुरुहरि काकाजी महाराज का १०८वाँ प्रागट्यपर्व माणावदर के मंदिर में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।**

इस महोत्सव का विषय 'अल्प संबंधना तव आभासे अम व्यक्तित्व शून्य बने...' ऐसा रखा गया था।

पू. हरेशभाई ने कहा कि स्वामिनारायण संप्रदाय का आरंभ हुआ तब से स्वामिनारायण भगवान की अनहद कृपा इस पृथ्वी पर हुई। जूनागढ मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा हुई तब वहाँ के नवाबने महाराज को वही रहने को कहा था। तब स्वामिनारायण भगवानने कहा था कि मैं तो नहीं रहूँगा, लेकिन मेरे जैसे साधु को यहाँ रखूँगा। फिर महाराजने गुणातीतानंदस्वामी को वहाँ रखा। ऐसे गुणातीतानंदस्वामी की भेट सभीको

Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatya Din celebration at Manavadar

मिली। श्रीजी महाराज पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान है और सभी के कल्याण के दाता है वह बात गुणातीतानंदस्वामीने सौराष्ट्र के हरिभक्तों के हृदय में दृढ करवाई। वैसे योगीजी महाराज राजी हुए और गुरुहरि काकाजी महाराज की हमें भेट मिली। वे माणावदर बहुत बार आते थे। योगीजी महाराज स्वामिनारायण भगवान का साक्षात् स्वरुप ही है वह बात काकाजीने दृढ करवाई। देवशीबापा, हरिभाईसाहेब, भवानबापा, वशरामभाई, नरसिंहदास जैसे करीब ५० हरिभक्तों काकाजी की आज्ञा में समर्पित हो के जीवन जीये। इसकी फलश्रुति योगीबापा की जयंती यहाँ मनाने का पक्का हुआ था। काकाजी की तालीम से वह समैया हम बहुत अच्छे से कर पाये। उनकी एक ही आज्ञा थी कि योगीबापा जो बोले उसमें हाँ कहना। उसके बाद यहाँ मंदिर तैयार हो गया। काकाजी के प्रागट्यदिन दि. १२ जून को यहाँ अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा हुई। काकाजी के संकल्प से और योगीबापा के आशीर्वाद से यहाँ गोंडल अक्षरदेरी जैसी देरी खडी हो गई। काकाजी का ऋण हम अदा कर ही नहीं सकते। काकाजीने इतना दिया है कि हम उसको बयाँ नहीं कर सकते। भरतभाई, वशीभाई और पवई के सभी मंडल को लेकर आप यहाँ आये उसका बहुत आनंद है। तो हम हमारी भक्ति से काकाजी, साहेबजी और गुणातीत स्वरुपों को राजी कर ले वही प्रार्थना।

प.पू. पंकजभाई ने कहा कि सन् १९५२ में गुरुहरि काकाजी महाराज को साक्षात्कार हुआ उसके पहले परोक्ष का सत्संग था। योगीजी महाराजने हर किसीकी सेवा की, लेकिन उनकी सेवा हमें करनी है वह आह्लेक काकाजीने हमारे अंदर जगाई। आज हमारे समक्ष जो प्रगट संतों है उनको साधु बनाया तब से नहीं, लेकिन उनका प्रागट्य हुआ तब से भगवान का कार्य करने का निशान पक्का ही होता है। विद्यानगर में अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय के निर्माण के समय योगीजी महाराजने काकाजी को साहेबजी और अन्य युवकों को मार्गदर्शन देने की आज्ञा की थी। तो काकाजी मुंबई से हर १५ दिन में विद्यानगर आते थे। बिना किसी सुविधा के वे साहेबजी और युवकों के साथ हॉस्टेल में भी रहते थे। उस समय जो आठ भाईयों थे उनको काकाजीने कहा था कि साहेबजी सामान्य पुरुष नहीं है, वो भगवान का कार्य करने आये है। हमें साहेबजी की सच्ची पहचान भी काकाजी द्वारा हुई। उस समय काकाजी के साथ साहेबजीने कई जगहों पर विचरण किया। उन्हें जितना नमन करें उतना कम है। तो हे काकाजी! जैसे आप निर्दोषबुद्धि के राजा थे वैसे हम भी निर्दोषबुद्धि से जीवन जी सके वही प्रार्थना।

प.पू. दिनुभाई ने कहा कि श्रीजी महाराज कहते थे कि गढडा मेरा और मैं गढडा का। वैसे ही काकाजी कहते थे कि माणावदर मेरा और मैं माणावदर का। अब इससे विशेष तो सौराष्ट्र के भक्तों के लिये क्या भेट हो सकती है? उनके साथ हमारी बहुत सारी स्मृतियाँ है। काकाजी और प्रगट गुणातीत स्वरुपोंने तथा पवई के संतभाईयोंने माणावदर के भक्तों पर जो भरोसा रखा उसे हम कभी भी तोडे नहीं। ऐसे सत्पुरुष जो भी बोलते है वह सत्य ही होता है। साहेबजीने कहा था कि हम काकाजी का ऋण तो अदा नहीं कर सकते लेकिन उनके भक्तों की सेवा भाव से कर लेना। तो हमारी वाणी में नहीं, लेकिन वर्तन ही ऐसा बोले ऐसा हमारे गुरु का नाम हम रोशन करें वही प्रार्थना।

प.पू. माधुरीबहन ने कहा कि काकाजी हमेशा एक भजन गाते थे – 'गमी गमी तारी मूर्ति...' योगीजी महाराज की आज्ञा से काकाजी-पप्पाजीने हम बहनों का काम किया उसके लिये उनको जितना धन्यवाद दे उतना कम है। ताराहबहन, ज्योतिबहन, हंसादीदी और देवीबहन – इन चारों बहनोंने मिलकर जो साथ दिया उससे हमारा मार्ग सरल हो गया। उन्होंने जो सहन किया उससे आज हम सुखपाल में भगवान भज रहे है। काकाजी माणावदर बहुत आते थे। यहाँ भक्तों को भगवान भजने के लिये काकाजी की सहाय से सरल हुआ। हमारे अंदर हठ-मान-ईर्ष्या के नकारात्मक भाव है उसे निकालने काकाजी हमको साधना करने के सरल उपाय बताते थे। हम पवई के बहनों की जवाबदारी भरतभाई को दी, जिससे हम कोई तकलीफ आई नहीं। बडे सत्पुरुष हमें हमेशा मार्गदर्शन देते ही रहते है। काकाजी हमेशा स्वरुपयोग करने की आज्ञा करते थे। जिसे हम ४ Point Programme कहते है, वह हम दृढ करना है। तो हे काकाजी! आप जो कार्य हमारे पास करवाना चाहते है वह हम सहजता से कर पाये वही प्रार्थना।

उसके बाद दिल्ली मंडल की ओर से पू. नित्यादीदी रचित भजन 'स्मृति काकाजी की आनंद में ले जाये...' पू. हितेनभाई द्वारा प्रस्तुत हुआ।

पू. अशोकबाबु ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज का जितना महिमागान करें उतना कम है। मेरे साथ उनकी बहुत सारी स्मृतियाँ है। लेकिन उस समय हमें समझमें नहीं आता था कि काकाजी क्या लीला कर रहे है? लेकिन आज हमें जब वो प्रसंग याद आते है तो ऐसा लगता है कि काकाजी यहाँ प्रगट ही है। काकाजी का वर्णन करने के लिये हम असमर्थ है। तो हमें जो प्रगट स्वरुप के साथ जोडा है उनको प्रगट और प्रत्यक्ष मानकर उनकी आज्ञा में जीवन जीये वही प्रार्थना।

प.भ. ओ.पी.अग्रवालजी ने कहा कि माणावदर के भाईयोंने गुरुहरि काकाजी महाराज के जो प्रसंग बताये उससे ऐसा लगता ही नहीं है कि हमने स्थूल रुप से काकाजी को देखा नहीं है। सभी केन्द्रो में संतों, संतभाईयों तथा संतबहनोंने काकाजी को अखंड जीवंत रखा है। उनके रोमरोम में काकाजी विराजमान है। इन स्वरुपों द्वारा हम हरपल काकाजी का सहज ही दर्शन कर पा रहे है। माणावदर की देरी में प्रदक्षिणा करने का मौका मिला उसके लिये मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ। माणावदर मंडलने इतनी अच्छी सुविधा की उसके लिये उनको बहुत धन्यवाद देते है। तो सभी प्रगट स्वरुपों की सेहत अच्छी रहे वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि यहाँ गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रागट्यदिन के साथ सभी हरिभक्तों को पंचतीर्थी का दर्शन कराने के लिये लाये। उसकी व्यवस्था के लिये सभी युवकों को धन्यवाद है। काकाजीने विपरीत परिस्थिति में भी तकलीफ को मौका मानकर खुशी से उसका स्वीकार करते थे। मैं बहुत चंचल स्वभाव का था। तो मेरे स्वभाव के विरुद्ध की सेवा उन्होंने दी। CA और महापूजा करो। ऐसे अशक्य को वे शक्य कर सकते थे। साक्षात्कार के बाद सन् १९७४ में काकाजी यहाँ पधारे थे और माणावदर के मुक्तों को साधु के मार्ग में आगे बढने तैयार किया। सन् १९७२ से १९६६ दौरान योगीबापा की पराभक्ति के कार्य को उन्होंने सफल बनाया। सन् १९६८ में प.पू. गुरुजी को दिल्ली में सत्संग का

सुकान सौंपा तो आज बहुत बडा मंडल वहाँ तैयार हो गया। उसके बाद सन् १९७३ से परदेश में सत्संग का आरंभ हुआ। काकाजीने पंजाब-लुधियाना में भी सत्संग का कार्य किया। अभी वहाँ जो मूर्तिप्रतिष्ठा हुई उसमें काकाजी की मूर्ति ७ दिन मैं तैयार हुई और उसकी प्रतिष्ठा भी हो गई। काकाजी एक बात बोलते थे कि कोई भी तकलीफ आये तो धुन करो। वचनामृत लोया ७ में बताया है कि निर्लज्ज हो कर उच्च स्वर से जिह्वा से धुन करना। वो काकाजीने की और करवाई। पप्पाजी भी कहते थे कि धुन ही सारे कार्य करेगी। काकाजी की दूरंदेशी दृष्टि थी। आध्यत्मिकता के इतिहास में पहलीबार स्वरुपयोग जैसा शब्द आया। हम जैसे गुणातीत स्वरुप में जुडेंगे तो हमारे अंदरुनी स्वभाव टल जायेंगे और हमें पता भी नहीं चलेगा। ऐसे स्वरुपयोग की रीति सीखाई। काकाजीने आज के Digital Technology में मानव को सहाय हो ऐसे Practical Techniques उस समय हमें बता दी थी। तो हे काकाजी! सभीको सुखीया करना और आशीष बरसाते रहना यही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि जीवन में कठीन प्रसंग तो आते ही है लेकिन बडेपुरुष के संबंध में होने से कोई बडी कठिनाई आनेवाली हो तो वह छोटे प्रसंग से निकल जाती है। हमारे संत हमारे पास अगर कोई दु:ख आता है तो उसे टालने के लिये सहाय करते है लेकिन हम समझ नहीं पाते। फिर भी वे हमारे लिये हरपल धुन करते है। काकाजी के छोटे छोटे प्रसंग भी हमें बहुत प्रेरणा देते है। उनकी ६०वीं जयंती में उन्होंने जो आशीष दिये उसकी Audio अभी हम सुनेंगे। उस १५ मिनट के प्रवचन में हमें क्या करना है, क्या हो रहा है और हम कहाँ गलती करते है वह सारी बातें उन्होंने बताई है। गुरु का प्रागट्यदिन और गुरुपूर्णिमा यह दो प्रसंग शिष्य के लिये सबसे बडे दिन होते है। अपने अंतिम दिनों में काकाजी कहते थे कि मैं अब बोलनेवाला नहीं हूँ, अब तक मैंने जो कुछ भी बताया उस प्रकार आपको जीवन जीना है। तो हम ऐसा सोचते थे कि वो बोले बिना रह नहीं सकते। वे देहलीला त्याग करनेवाले है ऐसा उन्होंने हमें बता दिया था, लेकिन वह हम समझ ही नहीं पाये। तो उनके जीवन के कुछ सूत्र मैं बताता हूँ। **(१) थोभो, थोभो, थोभो, बाद में दौडो** – ऐसा करेंगे तो हम अपने लक्ष्य पर पहुँच जायेंगे। कभी भी कोई ईच्छा होती है तब रुक जाना चाहिए। हम तुरंत प्रतिभाव देते है। पहले ३ मिनट भजन करो। **(२) उधार का सत्संग मत करो** – सत्संग खुद का होना चाहिए। किसीने बोला है इसलिये हम सत्संग कर रहे है तो ऐसा नहीं होना चाहिए। उससे सत्संग पक्का नहीं होगा। **(३) तीव्र अभीप्सा** – कोई भी तकलीफ हो तो तीव्र अभीप्सा के साथ प्रार्थना करनी चाहिए। काकाजी कहते

थे कि हम श्रद्धालु नास्तिक है। काम होगा की नहीं होगा ऐसा हम संशय करते रहते है। **(4) Do not consider the facts as they are, but go according to your inner conviction -** हमारे गुरुने जो बताया है और हमारे अंतर में जो प्रेरणा होती है वैसे आगे बढो। सच्चे हृदय से की हुई प्रार्थना भगवान को पहुँचती ही है। **(5) Irrespective of my own thinking, liking, belief or conviction, let thy should be done.** प्रभु की मर्जी के मुताबिक कार्य हो ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए। तो काकाजी बोलते थे वैसे निर्दोषबुद्धि के राजमार्ग पर हम दौडते हो जाये वही प्रार्थना।

गुरुहरि काकाजी महाराज के Audio द्वारा आशीर्वाद प्राप्त हुए। उन्होंने कहा कि ये सब योगीजी महाराज और शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद के फलस्वरुप हुआ है। सच बात बताता हूँ – **(१) व्यावहारिक (२) आध्यात्मिक।** वैसे मैं ६० साल का लगता नहीं हूँ ऐसा सभीको ख्याल होगा। तो आज ६०वी जयंती की षष्ठीपूर्ति कैसे हुई? मैं खुद को बहुत जवान मानता हूँ। मेरे गुरुदेवने भी ८५ साल तक नियमित काम किया। शास्त्रीजी महाराज जवान थे और उनका सेवन करेंगे तो हम भी जवान ही रहेंगे। उम्र से कोई लेना-देना नहीं होता। हमारे अंदर का Spirit, उत्साह, जोश। उसके मूल में प्रभु की आस्तिकता है। हम श्रद्धालु नास्तिक है इसलिये Power काम नहीं कर रहा। इसलिये मैंने Tantra (The Real Essence of Tantra) की पुस्तक लिखी। ३ हजार साल Traditional Tantra कुंडलिनी और चक्र के ऊपर चला। यहाँ हमारा हृदय प्रभु के अस्तित्व पर चलता है। यहाँ ९९ प्रतिशत लोग श्रद्धालु नास्तिक है, इसलिये आशीर्वाद का फल मिल नहीं रहा। इसलिये आपके लिये १८ हजार माला की।

पहला सूत्र – मुझे शास्त्रीजी महाराज के प्रति पहले से ही असाधारण भाव था। आप जिसको भी मानो उसे अर्जुन की तरह मानना ही पडेगा, लेकिन मन बीच में आयेगा। अर्जुन कैसा भी था लेकिन वो श्रीकृष्ण का था। हम बहुत छलावा करते है और अभी भी कर रहे है। लेकिन हम प्रभु के पास खुल्ले मन से छोटे बच्चे की तरह समर्पित हो जायेंगे तो सम्राट बन जायेंगे। ऐसा सरल उपाय स्वामिनारायण भगवानने हमें बख्शिश में दिया। हम उनका स्वीकार नहीं करते इसलिये दु:खी है। पप्पाजीने कहते है कि गुणातीत स्वरुप मानने में नहीं आते, फिर भी मानो। वह बात शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज मूर्तिमान करके गये।

दूसरा सूत्र – I believe in a group and not groupism. सभी एकसमान, एक योगी परिवार, एक प्रभु का परिवार होकर रहे। गुणातीत ज्योत में आज ४४ जाति की बहनें एक होकर रहती है। हम केवल प्रभु के है। सहनाववतु। हमें साथ में हिलमिलकर कार्य करना है। जब हम विमुख हुए तब नंदाजी और सभी मुझे Consolation देने आये थे। लेकिन मेरे साथ योगीजी महाराज की अनुभूति थी।

तीसरा सूत्र – अगर आप प्रगट को सचमुच मानते हो तो हरेक चीज में Yes, Yes, Yes करके उनका पूरा स्वीकार करना। प्रगट को मानते हो तो 'ना' बिलकुल नहीं बोलना है। अगर गलती भी होती है तो कोई बात नहीं। प्रेम से सहन करना। दो जन मिलकर काम करेंगे तो शक्ति पेदा होगी। कांतिभाई, रमणिकभाई, साहेबजी, पप्पा और इनके साथ जुडकर सबसे बडा कलश चढाया स्वामीजीने। ऐसे परम पवित्र निर्गुण पुरुष उनका पूरा मंडल और ये संतोंने जो महेनत की तथा हमारे कार्य में जिन्होंने सेवा दी, जो भी

बहनों, संतों, भाईयोंने इस कार्य को शोभायमान किया है, साथ ही पुस्तक के विमोचन के लिये ४ महिने से मुकुंदजीवनस्वामी और अन्य साथीयों को मैं धन्यवाद देता हूँ। I always believe in total celebration. Miseries and agonies हमने खडी की है। स्वामिनारायण भगवान के वरदान को हमें सफल करना है। साहेबजी की भावना एक ही है कि सभीका भला हो। स्वामिनारायण भगवान का संदेश हमें व्यापक बनाना है। कमनसीबी है कि हम श्रद्धालु नास्तिक है।

किसीभी धर्म के हो लेकिन दुनिया में युगल उपासना ही अखंड रहनेवाली है। वही युगल उपासना के शास्त्रीजी महाराज आध्यसंस्थापक है। सन् १९७२ के पहले से ही मेरी निष्ठा दृढ थी। जैसे अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण थे, वैसे मेरे शास्त्रीजी महाराज सबकुछ कराने और करनेवाले है। वही परंपरा योगीजी महाराजने भी चालु रखी। ऐसे आध्यात्मिक समाज की स्थापना हो गई। संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों चार पांखोवाला एक वृक्ष है। गुरु गुणातीत और महाराज भगवान है। तुलनात्मक या अंदरोअंदर कोई भी मानसिक भूमिका में हम रहेंगे तो माया बीच में आयेगी। हमें आनंद करना है, तो दो अच्छे साधु और तीन हरिभक्तों के साथ मैत्री करो। मैं सात साल का था तब से स्वर्ग लाने का निश्चय किया, लेकिन सचमुच तो अक्षरधाम पृथ्वी पर आ गया है। अक्षरधाम यानि अंत:करण की शांति, शुभ संकल्प। हम कितने भी प्रवचन करेंगे लेकिन अंदरोअंदर एक भावना पर जीवन जी नहीं सकेंगे, एकता नहीं रखेंगे, हिलमिलकर काम नहीं करेंगे तो ये वैज्ञानिक दुनिया हमें गिनती में नहीं लेगी। योगीजी महाराज यानि सुहृदभाव, प्रेम का सागर। **आपकी तकलीफ हमें दो, केवल योगीजी महाराज का स्वीकार करो।** मैं एक शूरवीर यौद्धा हूँ, कभी हारा नहीं हूँ और हारूँगा भी नहीं। हारना मेरी Dictionary में नहीं है। यहाँ मंदिर में बहनोंने कितने दागीने दिये है, लेकिन मुझे वो कुछ भी नहीं चाहिए। आपकी भावना के लिये मैं ६० माला जरुर करुँगा। हरिप्रसादस्वामीजी और संतोंने योगीबापा के कार्य को बहुत शोभायमान किया है। जहाँ सादगी, सरलता, साधुता होगी उसीसे शोभा बढेगी। **जिस भक्तोंने ६० हजार माला की उनका जो कोई भी पाप, कसर हो वो मेरे सिर आये और आप उससे मुक्त हो वो १८ हजार माला के यज्ञ का फल आपको मिले।** योगीबापा के समय जो हो रहा था वही आज हो रहा है। आज पप्पाजी के पास आध्यात्मिक विकास के लिये रुपांतर का Process हो रहा है। स्वामिनारायण का राज यानि प्रेम, करुणा, देना। मेरी गुरुचरण में इतनी ही प्रार्थना है कि स्वामिनारायण भगवान के २००वीं शताब्दी उत्सव के बाद हिन्दुस्तान का भावि बहुत उज्जवल होनेवाला है।

जिसके लिये हम उत्सव मनाने आये है वहाँ व्यावहारिक बुद्धि छोडकर योगीजी महाराज को करवाना था उसके लिये हम तत्पर है? इसलिये २४ घंटे में से १ घंटे के लिये भी हमारा प्रामाणिक प्रयत्न है? अंदरोअंदर हम एकदूसरे को उपदेश करते है, लेकिन हम खुद पर आजमाते है? उसमें जो कोई भी कसर हो उसे में मेरी कसर समझता हूँ। तो इसके लिये हम सब पात्र बने। **आपकी जो भी क्षतियाँ हो वो हम पर आये, लेकिन आपका अच्छा ही हो। लेकिन आज के बाद भूल मत करना। ११ बार उनकी स्मृति करके काम करना।** सचमुच जिसको भी मानता हो उसका हो कि मन-चित्त-बुद्धि के हो? तो बडा झीरो दिखाई देगा। तो वो झीरो में से प्रकाश हो जाये। कोई पूछे कि आपने भगवान देखा है? तो मैं छाती ठोककर कह सकूँगा कि हाँ, मैंने देखा है और सात दिन में

वो अनुभव भी करा सकूँगा। ऐसा सभीको खुल्ला निमंत्रण भी दिया है। अक्षरपुरुषोत्तम का संप्रदाय विश्व धर्म है और रहनेवाला है। हम उसके पात्र बने, सभी हिलमिलकर काम करें।

इसी प्रकार गुणातीत समाज के अन्य सभी केन्द्रो में भी गुरुहरि काकाजी महाराज का प्रागट्यपर्व भक्तिभाव और आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

❊ शनिवार, दि. १४ जून को काकाजी का १०८वाँ प्रागट्यपर्व 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

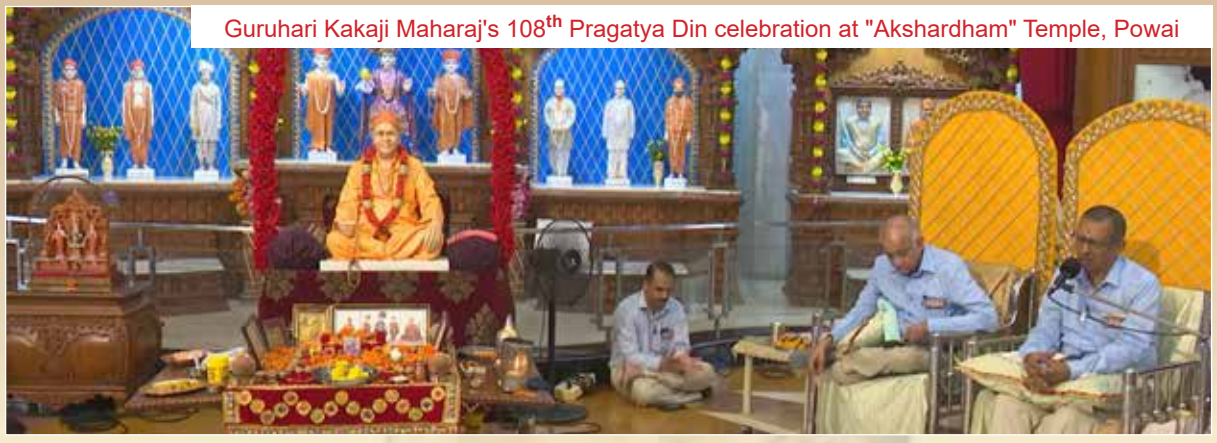
Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatya Din celebration at "Akshardham" Temple, Powai

सुबह विशिष्ट महापूजा के बाद प्रारंभ में प.भ. हेमंतभाई मर्चन्टने अहो! गाथा गुणातीत विभुनी... ग्रंथ में लिखी हुई प्रार्थना गुरहरि काकाजी महाराज के चरणों में अर्पण की।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि IQ - Intelligence Quotient, EQ - Emotional Quotient, SQ - Spiritual Quotient और 3Q यानि ये तीनों बातों को बुद्धि में उतारने की तालीम हमें काकाजी-पप्पाजीने दी। काकाजीने सन् १९७२ से सन् १९६६ पूरे देश में विचरण किया और सत्संग का विकास किया। १९६६ से १९८६ तक गुणातीत समाज की स्थापना की और विदेश में सत्संग का विकास किया। कोई भी जीव उनके पास आता तो उसे सत्संग में जोडके ब्रह्मभाव में रहते कर देते थे ऐसे कालातीत Eternality उन्होंने हमें दी। वे इतने ज्ञानी थे कि उनको बडे नेता बनने के लिये बहुत अच्छे मौके आये थे, लेकिन वह सब छोडकर केवल अपने गुरु और आध्यात्मिकता को प्रथम महत्ता दी। यहाँ एक सामान्य चुनाव

के कार्य में खडे होना बहुत मुश्किल होता है, तो उस समय काकाजी बुद्धिमान होने के बावजुद योगीबापा की आज्ञा से नंदाजी को चुनाव जीताने हरेक कार्य किया। आज उनके प्रागट्यदिन पर हम ऐसा संकल्प करें कि हम जिसको माने उसे इतना माने कि गुरु हार जाये। योगीबापा इतने राजी हुए कि साक्षात्कार करवाया। गुरुदेव के साथ सच्चा संबंध होना वही सच्ची लॉटरी हमें लग गई है। वच.प्र. २४ में कहा है कि जैसे बालक के हाथ में चिंतामणी दी हो और उसे उसका माहात्म्य नहीं है, क्योंकि उसका पता नहीं है। वैसे हमें जो मिला है उसकी किमत नहीं है। काकाजी कहते थे कि मफतलाल का लडका भीख नहीं मांगता। काकाजी हमको अक्षरधामरुप बनाने का संकल्प लेकर आये थे। पूरा जीवन काकाजी योगीबापा का प्रकाश बनकर जीवन जीये। हे काकाजी! हम अखंड आपकी स्मृति में डूबे रहे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि काकाजी हमारे चैतन्य के शिल्पी है। ऐसे गुणातीत संत के सामने कोई चैतन्य आता है तो उनके अंदर हमारा शिल्प तैयार हो जाता है। हम काकाजी के संबंध में आये और उन्होंने हमारा कैसा शिल्प बना दिया वो आज समझमें आता है। तो वो जैसा हमें बनाना चाहते है वैसा हमें बनना है। काकाजी के तीन सूत्र मैं बताता हूँ। **(१) जितना समर्पण, उतना सुख –** समर्पण एक ही बार होता है। उसके बाद हमारा अस्तित्व रहता ही नहीं है। जिस पल उन्होंने शास्त्रीजी महाराज को बोला कि मैं मरने आया हूँ। वही सच्चा समर्पण उन्होंने अंत तक रखा। काकाजी को लक्ष्मी बहुत प्यारी थी। शास्त्रीजी महाराजने ५१ हजार की सेवा मांगी, फिर भी काकाजीने प्रेम से दे दी। समर्पण में भी तीन भाव आता है। **(a) बंदर के बच्चे का भाव** – बच्चे को माता को पकडकर रखना पडता है। **(b) बिल्ली के बच्चे का भाव –** मैं आपका हूँ बस यही भाव होता है। **(c) मरघी के बच्चे का भाव** – जिसमें माता बच्चे को ऐसी तालीम देती है कि दूर हो तो भी सुहृदभाव के साथ सबके साथ मिलकर कैसे रहना वह सीखाती है। ऐसा समर्पणभाव हमें काकाजीने सीखाया। **(२) जितना सुहृदभाव उतनी शक्ति –** काकाजीने ऐसा सुहृदभाव से जीवन जीया। सुहृदभाव हमको करना है ऐसा भाव होगा तो शक्ति काम करेगी। **(३) जितनी सरलता, उतनी स्थिति –** बडेपुरुष जो बोले उसमें हाँ करना वह स्थिति। महाराज को सर्व कर्ता मानेंगे तो ही ऐसी स्थिति प्राप्त होती है। काकाजी ऐसे सरलता के स्वरुप थे। तो समर्पण, सरलता और सुहृदभाव से हमें जीवन जीना है। हमें सिंह जैसा बनना है। तो हे काकाजी! आपकी मर्जी हो ऐसा हमारा शिल्प तैयार हो जाये वही प्रार्थना।

❊ **शनिवार, दि. २१ जून को ११वे आंतरराष्ट्रीय योग दिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.भ.डॉ. दीपकभाई परमार तथा उनके द्वारा तैयार किये गये अन्य योग शिक्षक की उपस्थिति में हुआ।**

International Yoga Day at "Akshardham" Temple, Powai

International Yoga Day at "Akshardham" Temple, Powai

❊ शनिवार, दि. २१ जून को वोकिगन शिकागो मंदिर का ४४वाँ पाटोत्सव प.पू. दिनकरभाई और स्थानिक हरिभक्तों की उपस्थिति में मनाया गया। साथ ही ठाकोरजी को विशिष्ट अन्नकूट भी अर्पण हुआ और बाद में दिनकरभाईने आशीष दिये।

44th Patotsav celebration at Wakegun Temple, Chicago

❊ रविवार, दि. २२ जून को देश-विदेश के युवकों द्वारा आज की युवापेढी को भविष्य में आगे बढने के लिये विशिष्ट International Youth सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें प.भ. मनोज भदोरिया, पू.

आनंदभाई, पू. मननभाईने आध्यात्मिकता एवं आज के Modern World के बारे में अपने विचार प्रकट किये। अंत में दिल्ली से प.पू. गुरुजी, शिकागो से प.पू. दिनकरभाई, पवई से प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाईने विशिष्ट आशीर्वाद दिये।

International Youth Sabha at Powai

Tree Planting at Chafevadi, Karjat

❊ गुरुवार, दि. २६ जून को कर्जत के कडाव गांव में चाफेवाडी जिल्ला की स्कूल में योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से वृक्षारोपण का कार्यक्रम हुआ। पू. आनंदभाई, प.भ. जिज्ञाबहन रावलने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। साथ ही सभी गांववालों को वृक्षारोपण के बारे में जाग्रत किया और उनका उत्साह बढाया।

❊ रविवार, दि. २९ जून को ११वे आंतरराष्ट्रीय योग दिन का कार्यक्रम Megarugas Hall में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, श्री. नरेन्द्र ब्रह्मचारीजी, पू. माधुरीबहन, पू. आरतीबहन और अन्य संतबहनों तथा हरिभक्तों प.भ.डॉ. दीपकभाई परमार तथा उनके द्वारा तैयार किये गये अन्य योग शिक्षक, जलाजा फाउन्डेशन के ट्रस्टी श्री. जे.पी. शेट्टीजी, डॉ. स्वप्नील शाह, डॉ. जयना शाह, श्री. उपाध्यायजी एवं अन्य कईं अतिथिओं की हाजरी में संपन्न हुआ।

प्रारंभ में दीपप्रागट्य के साथ इस कार्यक्रम की शुरुआत हुई। उसके बाद छोटे-छोटे बच्चोंने अलग-अलग योग के आसान सभीके समक्ष प्रस्तुत किये।

उस दिन श्रीमती नुपूरजी द्वारा तैयार की गई पुस्तिका 'Amrutvani of A Yogi' का विमोचन हुआ। इस पुस्तक में सहाय करनेवाले सभीके प्रति आभार प्रदर्शित किया।

पूरे कार्यक्रम का संचालन डॉ. जयनम प्राचीजीने बहुत अच्छे से किया।

अंत में सभी योगशिक्षकों का सन्मान भी किया गया।

International Yoga Day at Megarugas Hall, Chandivali

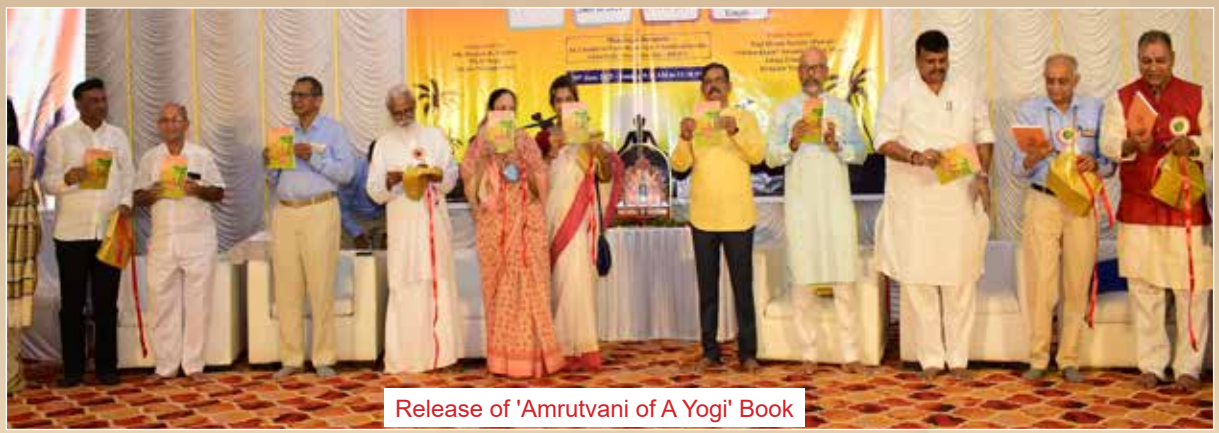

Release of 'Amrutvani of A Yogi' Book

❋ ❋ ❋

अक्षरधामगमन

बोरीवली, मुंबई में रहनेवाले सेवाभावी एवं सरल ऐसे प.भ. नलिनीबहन घाग (उम्र-७८) काफी समय से बीमारी से जूझकर गुरुवार, दि. १२ जून को अक्षरनिवासी हुए।

प.भ. रेखाबहन पवार, पू. कुसुमताई, पू. लीलुबहन, पू. माधुरीबहन और प.भ. राजुभाई आहिर के वे बडी बहन थी। पिता प.भ. अर्जुनभाई और माता प.भ. पुष्पाबहन के समय से वे सत्संग तथा तारदेव मंदिर के साथ जुडे थे। अपने मातापिता की ओर से भक्ति और सत्संग के संस्कार मिले तथा काकाजी महाराज की भी बहुत भाव से सेवा की थी। नलिनीबहन महानगर टेलिफोन निगम में सेवारत थी तभी से

उनको तारदेव सत्संग समाज के प्रति अद्भुत लगाव था। अपने जीवन के अंत समय तक पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों के प्रति उनको बहुत प्रीति थी।

काकाजी के स्वधाम जाने के बाद उन्होंने वही आत्मीयता का घनिष्ठ संबंध पवई के सत्संग समाज के प्रति हमेशा रखा। उनके जीवन में बहुत उतार-चढाव आये फिर भी उन्होंने कभी भी किसी भी प्रकार की फरियाद नहीं की और बहुत शांति से, सुझबुझ के साथ सभी प्रसंगो में समता रखी। उन्होंने यथाशक्ति पवई के लिये भी सेवा की। अपने दोनों संतान प.भ. योगेशभाई घाग और प.भ. स्मिताबहन (पिंकीबहन) को भी सत्संग के संस्कार दिये।

उनकी अंतिम विधि में पवई से प.पू. भरतभाई, पू. अश्विनभाई तथा पू. माधुरीबहन और संतबहनें खास गये थे और उनको श्रद्धांजलि अर्पण की थी। दि. २८ जून को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में उनके लिये खास त्रयोदशी की महापूजा हुई। सभी संतभाईयों तथा संतबहनोंने उनके विशिष्ट गुणों का दर्शन करवाया और उनके लिये प्रार्थना की।

भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों नलिनीबहन को अपनी निग्रानी में रखें और परिवार के सदस्यों को ऐसे कठीन समय में धैर्य और शक्ति प्रदान करें वही प्रार्थना।

'તારી કરૂણાનો કોઈ પાર નથી...'

ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ માટે રચાયેલા ભજન 'લીધાં વિભુ તે પાંખમાં...'માં એક પંક્તિ આવે છે. 'પ્રારબ્ધ સહુનાં તું નિજ શિર લેતો, પળ પળ લે સંભાળ.'

ઉપરોક્ત પંક્તિના સંદર્ભમાં કાકાજીની ભક્તો પ્રત્યેની કરૂણાને સંભારીએ તો આપણને કાકાજી અવારનવાર પ્રસંગોપાત જાહેરમાં એમના પ્રવચનમાં એક વાત કહેતા એ અચૂક યાદ આવી જ જાય. તેઓ પોતાના આશિષમાં કરૂણાવશ થઈને ઘણીવાર કહેતા કે **'જાવ, અત્યાર સુધીનું બધું માફ, પણ હવે આજ પછી નવું પ્રારબ્ધ ઊભું નહીં કરતા.'** આવી રીતે તો તેમણે કેટલીયવાર કહ્યું હશે. દર વર્ષે જ્યારે પવઈમાં તેઓ વિશિષ્ટ યજ્ઞ કરાવતા ત્યારે પણ યજ્ઞમાં આહુતિ અર્પણ કરતી વખતે તેઓ 'સ્વાહા' બોલતા અને બોલાવતા. આપણને એ ઔપચારિક લાગતું પણ એની પાછળ તેઓની ભાવના તો હંમેશાં

એ જ રહેતી કે હરિભકતોનાં પ્રારબ્ધ આ યજ્ઞમાં હોમી દેવાં. વળી તેઓ કહેતા પણ ખરા કે 'આ યજ્ઞમાં બધાં ભક્તોનાં પ્રારબ્ધ હું હોમી દઉં છું' અને એ રીતે તેઓ સહુને જાણે અભયદાન આપતા.

આ શબ્દો એ ફક્ત મૌખિક આશ્વાસન કે ઠાલાં વચનો માટે નહતા. તેની પાછળ અદ્‌ભુત સામર્થી અને પ્રભુતાનું બળ હતું. કાકાજીની આવી કરૂણાનો વિચાર કરીએ ત્યારે ભગવાન સ્વામિનારાયણે અત્યંત કરૂણાવશ થઈને પોતે જ્યારે દીક્ષા લીધી ત્યારે એમના ગુરૂ સદ્‌ગુરૂ પ.પૂ. રામાનંદસ્વામી પાસે જે વરદાન માંગ્યાં તે અચૂક યાદ આવી જ જાય. એવી જ કરૂણા ભગવાન સ્વામિનારાયણને અખંડ ધારી રહેલા એવા કાકાજી પણ આપણા સહુ ઉપર વરસાવતા હતા. પરંતુ તે એટલું સહજ અને અનૌપચારિક હતું કે આપણને તેનો જેવો છે એવો યથાર્થ મહિમા નહતો. પરંતુ ગુણાતીત પુરૂષોની તો આ જ રીત હોય છે કે તેમના ભક્તો કે સમાજ યથાર્થ સમજે કે ન સમજે પણ તેમની કરૂણાનો ધોધ તો અસ્ખલિત વહેતો જ રહે.

ભગવાન સ્વામિનારાયણના સમયમાં પણ એમના જીવનના એવા કેટલાય પ્રસંગો છે કે તેમણે ભક્તોની પાત્રતા કે કુપાત્રતા જોયા વગર અકારણ જ સહુ પર કરૂણા વરસાવી. જેતલપુરમાં તેમણે યોજેલ યજ્ઞ વખતે એક સામાન્ય ઘઉં દળવાની સેવા બદલ એક તદ્ધન સમાજમાં સામાજિક દૃષ્ટિએ વિભત્સ અને નગણ્ય ગણાતી એક વેશ્યાનું પણ સદ્‌ગુરૂ મુક્તાનંદસ્વામી જેવું કલ્યાણ કર્યું. ગુણાતીતાનંદસ્વામીના વખતમાં પણ આ જ કરૂણાનો ધોધ વહેતો રહ્યો હતો. સાવરકુંડલાના દરબારની ઉપેક્ષા અને યાતનાનો ત્રાસ વેઠીને પણ તેમણે એ નિઃસંતાન દરબારને દીકરો થાય એવા આશીર્વાદરૂપી વરદાન આપ્યું હતું તે પ્રસંગ તો સહુની જાણમાં છે જ. બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજે પણ ભક્તો માટે જે યાતનાઓ વેઠી છે અને તેમનાં પ્રારબ્ધો માથે લઈને તેમની રક્ષા કરી છે તેનું વર્ણન જ અશક્ય છે.

અફીણના બંધાણી એવા એક હરિભક્તને યોગીજી મહારાજના ગુરૂ પૂ. વિજ્ઞાનદાસસ્વામીએ ખૂબ આગ્રહ કરીને અફીણ ન લેવાનો નિયમ લેવડાવ્યો અને અફીણની લતથી જ્યારે રહી ન શકાય અને શરીરના સાંધા તૂટવા લાગે એવી પરિસ્થિતિ થતાં તે હરિભક્તની કાકલૂદીભરી પ્રાર્થનાથી અને તેના પ્રત્યેની દયાથી પ્રેરાઈને યોગીજી મહારાજે થોડુંક જ અફીણ લેવાની તેને છૂટ આપી, તે બદલ એમને વિજ્ઞાનદાસસ્વામીનો જે માર સહન કરવો પડ્યો અને અસહ્ય ત્રાસ ભોગવવો પડ્યો તે પ્રસંગ તો ખૂબ જ જાણીતો છે. એ ઉપરાંત પણ કેટલાય હરિભકતોના સ્વભાવ, પ્રકૃતિ જાળવીને તેઓને સત્સંગાભિમુખ કરવા માટે થઈને યોગીજી મહારાજે અપરંપાર ભીડો સહન કર્યો હતો.

આવો યોગીજી મહારાજનો એક બીજો પણ પ્રસંગ છે. એક વખત જામનગર તરફ તેઓ વિચરણમાં હતા અને જામનગરથી પાછા ફરતાં એક ગામમાં તેઓ ખાસ આગ્રહ કરીને ગયા અને એક ખેતરમાં જઈને

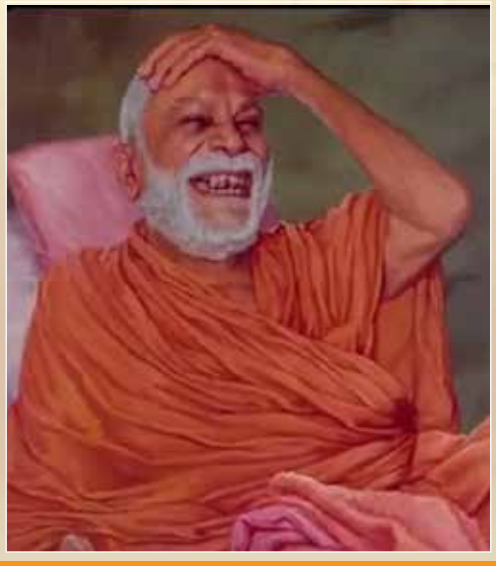

એક આંબાને બાથ ભરીને ભેટ્યા. ઘણો વખત સુધી એવી રીતે તેઓ ભેટીને પછી જેમનું ખેતર હતું એમને બોલાવીને કહ્યું કે 'હવે આવતીકાલથી આ આંબો સૂકાશે.' લગભગ સો ટ્રેકટર ભરાય એટલું લાકડું નીકળે એમાંથી એમણે એક ટ્રેકટર જેટલું લાકડું ગોંડલ મંદિરે મોકલવા કહ્યું. ખેતરમાંથી પાછા વળતી વખતે સાથે સેવામાં રહેલા પ.પૂ. પ્રભુદાસભાઈ (બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી)ને તેમણે કહ્યું કે 'આ આંબો એ 300 વર્ષનો હિમાલયનો એક સિદ્ધ જોગી હતો, પણ સજોગવશાત્ એક ગરીબ સાધુનો દ્રોહ કર્યો તેથી ભગવાને એને માફ ન કર્યો અને મનુષ્યજાતિમાંથી સીધો આ વૃક્ષનો અવતાર આપી દીધો. હવે આપણે એના આત્માને લઈને નીકળીએ છીએ અને હવે પછી એની સદ્‌ગતિ થશે.' એ પછી ૧૫ દિવસ પછી એ ગામના ખેતરનો માલિક અને હરિભકતો એક

ટ્રેક્ટર જેટલું એ આંબાનું લાકડું લઈને ગોંડલ મંદિરે આવ્યા અને યોગીબાપાને વાત કરી. ત્યારે બાપા બોલ્યા કે 'હવે એના આત્માનું કલ્યાણ થયું.' આમ મોટાપુરૂષની અકલ્પ્ય લીલાનો આપણે શું તાગ કાઢી શકીએ! પણ આ પ્રસંગ પરથી ખબર પડે છે કે એક આંબા જેવા વૃક્ષના જીવને સદ્‌ગતિ આપવા માટે થઈને યોગીજી મહારાજ જેવા ગુણાતીત પુરૂષે કેટલો ભીડો સહન કરીને તેનું કલ્યાણ કર્યું. તો આપણે તો કેવા ભાગ્યશાળી કે આપણને તો એવા ગુણાતીત પુરૂષોની ગોદ મળી, સમાગમ મળ્યો, સેવા મળી અને એથીય વિશેષ એમના લાડીલા અને નિષ્ઠાવાન ભક્તોની પણ સેવા મળી. તો આપણે કોઈપણ માથાઝીકમાં પડ્યા વગર કે કશુંય આઘુંપાછું કર્યા વગર એમની મરજી જાણીને એમની સેવા એ કહે એ પ્રમાણે કરી લઈએ તો આપણું તો કેટલું ભલું થાય!

કાકાજીએ પણ આવી જ કરૂણા અસ્ખલિત વરસતી રાખી હતી. એક વખત આપણા નિષ્ઠાવાન હરિભક્ત પ.ભ. મહેન્દ્રભાઈ ગાંધી બીમાર પડ્યા હતા ત્યારે તેમને જોવા કાકાજી સાંતાક્રુઝ એમના ઘરે ગયા હતા. તેમની પધરામણી થઈ હોવાથી મહેન્દ્રભાઈનાં પત્ની પ.ભ. વસુબહેને કાકાજી અને સાથે આવેલ ભક્તો માટે ખાસ રસોઈ તૈયાર કરી હતી. કાકાજીએ તે રસોઈ તો ગ્રહણ કરી, પણ તરત જ તેનું વમન કરી નાંખ્યું. તે સાથે જ મહેન્દ્રભાઈનો રોગ જતો રહ્યો. ભક્તો પ્રત્યે આ કેવી કરૂણા!

એવી જ રીતે આપણા નિષ્ઠાવાન હરિભક્ત પ.ભ. જાદવજીભાઈનાં બહેન એક વખત ખૂબ બીમાર હતાં. તેથી કાકાજી તેમને જોવા હૉસ્પિટલ ગયા. હૉસ્પિટલમાંથી આવ્યા પછી અચાનક જ કાકાજીનું સ્વાસ્થ્ય બગડી ગયું અને બે દિવસ સુધી તેમને સખત તાવ અને બેચેની રહ્યાં. બે દિવસ પછી તેમને સારું પણ થઈ ગયું. ત્યારે જાદવજીભાઈએ કહ્યું કે 'મારાં બહેનનું દર્દ કાકાજીએ પોતાના માથે લીધું અને બહેન સાજાં થઈ ગયાં.' આમ મોટાપુરૂષની ભક્તો માટેની ચિંતા અને એમને માટે વેઠી રહેલ ભીડાનો આપણને તો ખ્યાલ આવવો મુશ્કેલ જ છે!

મોટાપુરૂષ પાસે આપણે આપણી દૃષ્ટિએ જ તેમના ચરિત્રનું, પરિસ્થિતિનું, તેમના ભક્તોનું મૂલ્યાંકન કરતા હોઈએ છીએ. મોટાપુરૂષની હરેક લીલા પાછળ જીવોનું કેવળ રૂડું કરવાની જ ભાવના હોય છે. પરંતુ આપણને તેની ખબર પડતી હોતી નથી. આપણે આપણી રીતે જ કેવળ વ્યવહારિક સમસ્યાઓ, શારીરિક તકલીફો કે સામાજિક પ્રશ્નોનું નિરાકરણ લાવવા માટે જ મોટાપુરૂષનો જાણે–અજાણે ઉપયોગ કરીએ છીએ. આવે વખતે આપણે થોડીક સમજદારી કેળવીએ અને જો શારીરિક રીતે વ્યવસ્થિત રીતે વર્તીએ એટલે કે નિયમિત વ્યાયામ કરીને શરીરને સ્વસ્થ રાખીએ, વચ.ગ.પ્ર. ૧૮માં સ્વામિનારાયણ ભગવાને જણાવ્યા મુજબ આહાર–વિહાર યોગ્ય રાખીએ અને શ્રીજી મહારાજે શિક્ષાપત્રીમાં સૂચવેલ નિયમો પ્રમાણે આપણો વ્યવહાર શુદ્ધ અને નીતિવાળો રાખીએ અને તેમણે કહ્યા પ્રમાણે આવકના ચોખ્ખા ૧૦ ટકા અથવા ૫ ટકા ધર્માદો કરીએ અને કોઈની કોઈપણ જાતની માથાકૂટમાં પડ્યા સિવાય મહિમાથી સેવા અને સત્કર્મ કર્યા કરીએ તો મોટાપુરૂષ જોડે આપણે કોઈપણ પ્રકારની લૌકિક ખાનગી કરવાનો વખત આવે જ નહીં. એ રીતે તેમનો ભીડો પણ ખૂબ જ ઓછો થઈ શકે.

ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજના ૧૦૮મા પ્રાગટ્યપર્વે એમનાં ચરણે એટલી જ પ્રાર્થના કરીએ કે આપે તો અમ સહુ ઉપર અકારણ કરૂણા વરસાવી જ છે. તો અમે એને યથાર્થ સમજીને આપનાં પ્રગટ સ્વરૂપો પાસેથી તેનું યથાર્થ રહસ્ય અને તાત્પર્ય સમજીને જીવન જીવી એમના અને આપનાં અંતરમાં હાશ કરી શકીએ એવી સદ્‌બુદ્ધિ, પ્રેરણા અને બળ અમને સહુને મળે એ પ્રાર્થના.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) CSR Seminar and Workshop at "Akshardham" Temple, Powai on 1st June. (2) Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatyadin celebration at Manavadar. (3) Vicharan of Various Temples from 5th to 10th June. (4) Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 14th June. (5) Celebration of International Yoga Day at "Akshardham" Temple, Powai on 21st June. (6) Waukegan (Chicago) Temple Patotsav celebration on 21st June. (7) International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai on 22nd June. (8) Tree Plantation Activity by Yogi Divine Society in School at Karjat on 26th June. (9) International Yoga Day celebration at Megarugas Hall in the presence P.P. Bharatbhai, P.P. Vashibhai, P.B.Dr. Deepakbhai Parmar and various dignitaries on 29th June. (10) Akshardhamgaman of P.B. Naliniben Ghag on 12th June. (11) Article for Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatya Din on 12th June.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta